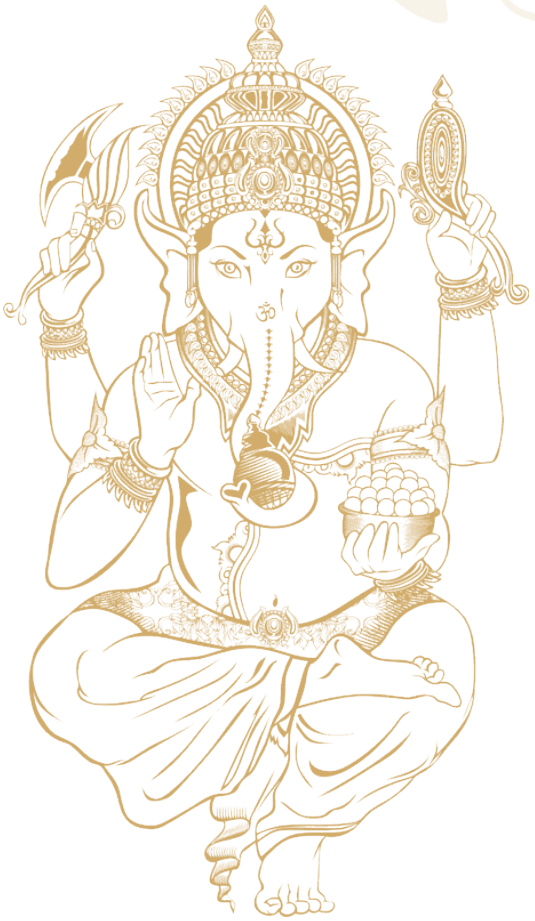

Ms Bhattacharjee

17 Sep 2025

08:45 AM

Habra

Model: Baby-Horoscope

Order No: 119473501

तिथि 17/09/2025 **समय** 08:45:00 **वार** बुधवार **स्थान** Habra **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:02
अक्षांश 22:50:00 उत्तर **रेखांश** 88:38:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:24:32 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	08:54:48 घं
वेलान्तर	00:05:29 घं
सूर्योदय	05:22:46 घं
सूर्यास्त	17:36:42 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	आश्विन
पक्ष	कृष्ण
तिथि	11
नक्षत्र	पुष्य
योग	परिघ
करण	बव

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	मेष
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	मेष
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	हू-हुस्नी
पाया(रा.-न.)	ताम्र-रजत
होरा	गुरु
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

शनि 17वर्ष 1मा 27दि
शनि
17/09/2025
14/11/2042

शनि	17/11/2026
बुध	27/07/2029
केतु	05/09/2030
शुक्र	04/11/2033
सूर्य	17/10/2034
चन्द्र	18/05/2036
मंगल	26/06/2037
राहु	02/05/2040
गुरु	14/11/2042

योगिनी

धान्या 2वर्ष 8मा 15दि
धान्या
17/09/2025
02/06/2028

	17/09/2025
भ्रामरी	02/01/2026
भद्रिका	03/06/2026
उल्का	02/12/2026
सिद्धा	04/07/2027
संकटा	03/03/2028
मंगला	02/04/2028
पिंगला	02/06/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			15:31:46	तुला	स्वाति	3	राहु	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			00:16:59	कन्या	उ०फाल्गुनी	2	सूर्य	राहु	सम राशि	1.19	कलत्र	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			04:37:35	कर्क	पुष्य	1	शनि	शनि	स्वराशि	1.15	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल			02:18:28	तुला	चित्रा	3	मंगल	केतु	सम राशि	1.28	ज्ञाति	भ्रातृ	वध
बुध		अ	03:28:17	कन्या	उ०फाल्गुनी	3	सूर्य	शनि	उच्च राशि	1.33	मातृ	ज्ञाति	प्रत्यारि
गुरु			26:20:23	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	केतु	शत्रु राशि	1.31	आत्मा	धन	अतिमित्र
शुक्र			02:51:53	सिंह	मघा	1	केतु	शुक्र	शत्रु राशि	0.93	पुत्र	कलत्र	विपत
शनि	व		04:36:38	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	सम राशि	0.94	भ्रातृ	आयु	जन्म
राहु			24:07:15	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु			24:07:15	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

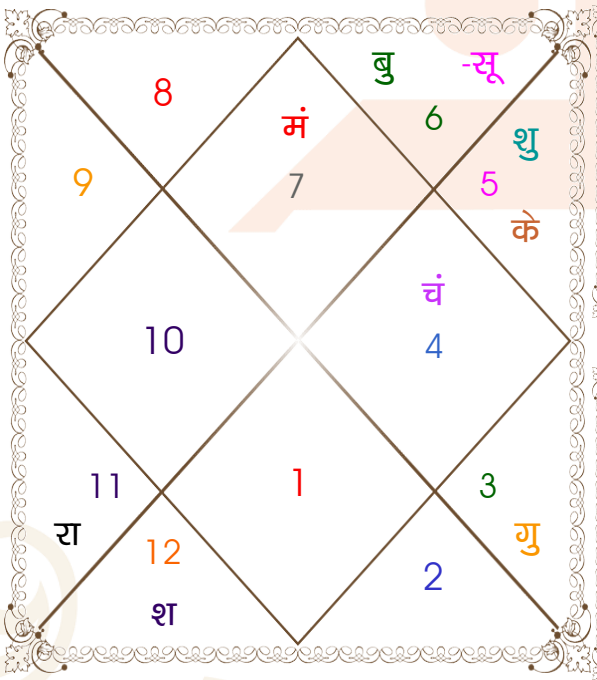

चन्द्र कुंडली

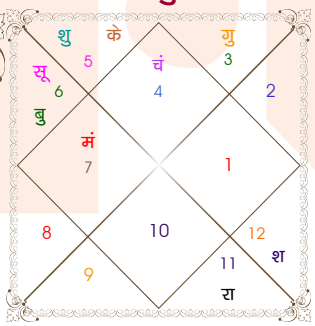

नवमांश कुंडली

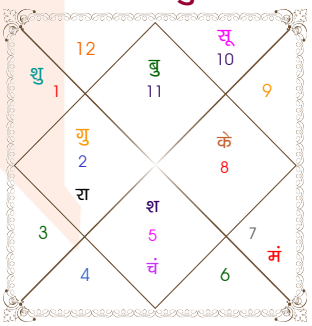

सर्वाष्टकवर्ग

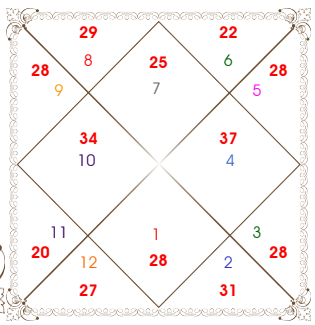

दशमांश कुंडली

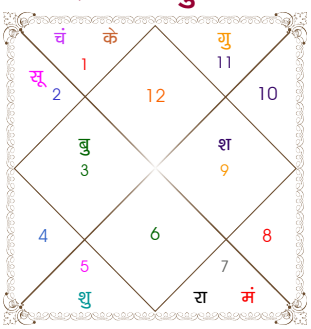

FLAIR KNOWLEDGE
ACHARYA AVIJIT BHATTACHARJEE
Upanagar, Nashik - 422006
9175715517/ 7887515529/ 7020260131 /9561566956
flairknowledge@gmail.com

नक्षत्रफल

आप पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्र होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि मेष, वर्ण विप्र, वर्ग मेष, देव गण तथा मध्य नाड़ी होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "हु" अक्षर से होगा।

आप देवताओं की पूजा द्वारा अर्जित धन से धनयुक्त रहेंगी। आपकी बुद्धि तीक्ष्ण होगी तथा अपने अधिकांश कार्यों को बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। आपको विविध प्रकार के शास्त्रों का ज्ञान भी रहेगा। साथ ही देखने में भी अति सुन्दर होंगी तथा सभी लोग आपसे स्नेह का भाव रखेंगे इस प्रकार आप सब की प्रिय रहेंगी। आप अपने जीवन में समस्त सुखों के उपभोग करने में सफल रहेंगी। आपकी प्रकृति कफ से युक्त रहेगी।

देवकर्म धनैर्युक्तो बुद्धियुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोकः शीतश्च सुभगः सुखीः।।
जातक दीपिका

अर्थात् पुष्य नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवार्चन से प्राप्त धन से युक्त, बुद्धिमान, कफ प्रकृति तथा सुख से परिपूर्ण होता है।

धार्मिकता की भावना नैसर्गिक रूप से आप में विद्यमान रहेगी तथा ईश्वर में आपकी पूर्ण आस्था रहेगी। आप शान्त चित्त की महिला होंगी तथा हमेशा शान्तचित्त से ही अपने समस्त कार्यों को करेंगी। इसके साथ ही पुत्र धन से भी आप सुशोभित रहेंगी।

देवधर्म धनैर्युक्तः पुत्रयुक्तो विचक्षणः।
पुष्ये जायते लोके शान्तात्मा सुभगः सुखी।।
मानसागरी

अर्थात पुष्य नक्षत्र का पुरुष देवता तथा धर्म को मानने वाला, धन से युक्त, पुत्रयुक्त, विद्वान, शान्त, सुन्दर तथा सुखी होता है।

ब्राहमण तथा देवताओं की आप भक्त होंगी तथा इनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान का भाव रहेगा तथा समयानुसार इनकी पूजा तथा अर्चना करती रहेंगी। धन से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी। साथ ही उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग आपसे पूर्ण प्रभावित रहेगा तथा इस वर्ग से आपको पूर्ण सम्मान तथा सहयोग की प्राप्ति होगी। आप अपने बन्धुओं से भी युक्त रहेंगी तथा उनसे अच्छे संबंध रखेंगी।

शान्तात्मा सुभगः पण्डितो धनी धर्मसंभृतः पुष्ये।
बृहज्जातकम्

अर्थात पुष्य नक्षत्र का बालक हृदय से शान्त प्रकृति वाला, सर्वप्रिय, सुन्दर, विद्वान

धन से सम्पन्न तथा धर्माचरण में तत्पर रहता है।

शारीरिक दृष्टि से आप हमेशा स्वस्थ तथा प्रसन्न चित्त रहेंगी। माता पिता अथवा सास सुसुर के प्रति आप पूर्ण रूप से अपने कर्तव्य का पालन करेंगी तथा यत्नपूर्वक उनकी सेवा में तत्पर रहेंगी। समाज में लोगों के साथ आपका अत्यन्त ही विनम्रता पूर्वक व्यवहार रहेगा तथा समाज से आपको पूर्ण मान सम्मान तथा आदर की प्राप्ति होगी। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के धन तथा सुखों से आप आजीवन परिपूर्ण रहेंगी।

प्रसन्नगात्रः पितृमातृभक्तः स्वधर्मसक्तो विनयाभियुक्तः।
भवेन्मनुष्यः खलु पुष्यजन्मा सम्माननानाधनवाहनाढ्यः।
जातकाभरणम्

अर्थात पुष्य नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

आप ताम्र पाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप राज्य या सरकार से नित्य धनलाभ अर्जित करने में सफल रहेंगी तथा समाज में दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। साथ ही आप सन्तोषी स्वभाव से भी युक्त रहेंगी। आपका आचरण श्रेष्ठ रहेगा। अतः सभी लोग आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे। जीवन में विविध प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा सुखपूर्वक जीवन में इनका उपभोग करेंगी। माता पिता के प्रति आप पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी तथा उनसे भी आपको पर्याप्त धन सम्पत्ति प्राप्त होगी ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी तथा विदुषी के रूप में आपका सम्मान होता रहेगा। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगी तथा वाहन एवं भूमि आदि जायदाद से भी सुसम्पन्न रहेंगी। धर्म के प्रति आपकी निष्ठा रहेगी तथा स्वभाव में साहस का समावेश रहेगा। आप परोपकार संबंधी कार्यों में भी में तत्पर रहेंगी तथा सज्जन पुरूषों का नित्य आदर करेंगी। इसके अतिरिक्त दानशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगी।

कर्क राशि में उत्पन्न होने के कारण आप का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। आप अपने समस्त कार्यों को निपुणता से सम्पन्न करेंगी तथा आजीवन धन से परिपूर्ण होकर धनवान कहलाएंगी। आप नैसर्गिक रूप से पराक्रमी होंगी तथा धार्मिकता की भावना से भी युक्त रहेंगी। आप पूर्ण श्रद्धा के साथ धर्म का पालन करेंगी। गुरूजनों की आप हमेशा स्नेहपात्र रहेंगी तथा उनका आर्शीवाद आपके साथ रहेगा। आप तीव्र बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा आपकी बुद्धि से सभी लोग प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आपको क्रोध अधिक मात्रा में आएगा तथा दुःख की भी आप अनुभूति करेंगी। आपके सभी मित्र अच्छे तथा सद्गुणों से युक्त होंगे। आप एक से अधिक कार्यों अथवा कलाओं के जानने में समर्थ होंगी बल आप में सामान्य रूप से रहेगा। आप घर से दूर अन्यत्र स्थाई या अस्थाई रूप से निवास करेंगी।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।

शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आपकी प्रकृति वात तथा कफ मिश्रित रहेगी तथा आपका सौन्दर्य अत्यन्ताकर्षक तथा रूप तेज तथा ओज से परिपूर्ण होगा। आप स्वयं अपनी बुद्धि तथा परिश्रम से अर्जित विपुल धन की स्वामिनी बनकर धनाढ्य कहलाएंगी। ब्राहमणों तथा देवताओं के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा समय समय पर आप इनका हार्दिक सत्कार तथा श्रद्धापूर्वक पूजार्चन सम्पन्न करेंगी। उत्तम कुल में उत्पन्न लोगों के प्रति आपके मन में उचित आदर तथा सम्मान का भाव रहेगा तथा इनकी सेवा एवं सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगी।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।
जातक दीपिका

आप वेदादिशास्त्रों का अध्ययन करके ज्ञान प्राप्त करेंगी। आप एक या एक से अधिक कार्यों तथा कलाओं में निपुण होंगी। आप मध्यम बली तथा सदाचारी रहेंगी। पुष्पों की सुगन्ध तथा जलक्रीड़ा की आप अत्यन्त शौकीन रहेंगी तथा समाज में पूर्ण रूप से यश प्राप्त करेंगी।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।
जातकाभरणम्

आपके गले का भाग स्थूल रहेगा तथा पुरूष वर्ग को आप पूर्ण रूप से अपने वश में करने में सफलता प्राप्त करेंगी। जल विहार करने में आपको आनन्द की प्राप्ति होगी आप बहुत से मित्रों की मित्र होंगी। साथ ही आप के द्वारा बहुत से भवनों का भी निर्माण किया जाएगा अथवा आप स्वयं बहुत से मकानों की स्वामिनी हो सकती हैं। आपका कद सामान्य रहेगा तथा आप टेढ़ी चाल से शीघ्र चलने वाली होंगी। साथ ही आपके पुत्रों की संख्या भी अल्प ही होगी।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकट्यिर्धनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोऽल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप जीवन में विभिन्न प्रकार की सम्पत्तियों तथा द्रव्यों का स्वामित्व प्राप्त करेंगी। ज्योतिष शास्त्र के विषय में आपको ज्ञान रहेगा। आपका सम्पूर्ण जीवन चन्द्रमा की कलाओं के समान क्षयवृद्धि को प्राप्त होगा अर्थात् उतार चढ़ाव आते रहेंगे। आप केवल स्नेह से ही वश में

हो सकती हैं। बलपूर्वक आपसे कोई कार्य नहीं करवाया जा सकता। आप अपने मित्रों को पूर्ण आदर तथा सम्मान देने वाली होंगी। साथ ही जीव पालन, बाग बगीचे, उद्यान या जलाशय इत्यादि के निर्माण में आपकी गहरी रूचि रहेगी।

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
ह्स्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङकैः नरः।।
बृहज्जातकम्

आप सौभाग्यवती होकर स्वनिर्मित गृह में निवास करेंगी तथा जो भी कार्य करेंगी उसे धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगी। अपने अधिकांश समय को आप भ्रमण तथा यात्रा में व्यतीत करेंगी तथा विनयशीलता के गुण से आप नैसर्गिक रूप से सुसम्पन्न रहेंगी तथा कामवासना के प्रति भी आपका पूर्ण आकर्षण रहेगा। कृतज्ञता के सद्गुण से आप सुशोभित रहेंगी। आप राज्य में किसी उच्च अधिकार प्राप्त पद को अलंकृत करने की भी क्षमता रखेंगी। सत्य का आप हमेशा पालन करेंगी तथा यत्नपूर्वक सत्य तथा प्रिय भाषण ही करेंगी।

युक्तः सौभाग्यययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरुचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी उत्तम तथा सबको प्रिय लगने वाली होगी जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप सरल बुद्धि की स्वामिनी होंगी तथा सादगी से विचार प्रकट करना तथा अन्य के विचारों को ग्रहण करने में अत्यन्त चतुर होंगी। आप शुद्ध तथा अल्प सात्विक भोजन लेना पसन्द करेंगी। गुणों की आप ज्ञाता होंगी तथा स्वयं महान विभूतियों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त रहेंगी। साथ ही धन ऐश्वर्य से आप आजीवन परिपूर्ण रहेंगी। किसी भी प्रकार का आपको अभाव महसूस नहीं होगा।

आपका शरीर सुन्दर तथा सौन्दर्यमय होगा। दानशीलता की प्रवृति का आप प्रदर्शन करती रहेंगी जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। आप सादगी पसन्द होंगी तथा भौतिकता तथा दिखावटीपन से दूर ही रहेंगी। साथ ही समाज में एक विदुषी की तरह आपका सम्मान किया जाएगा।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में

भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

आप मेष योनि में उत्पन्न हुई हैं। अतः प्रारम्भ से ही आप परम उत्साही रहेंगी। इसी उत्साह से जीवन में खूब उन्नति करेंगी। आप वीरता के गुण तथा युद्ध विद्या में निपुण हो सकती हैं। धन, वैभव तथा ऐश्वर्य से आप हमेशा युक्त रहेंगी। आप समस्त भौतिक सुखों का आजीवन उपभोग करेंगी। आप परोपकार की भावना से सुशोभित रहेंगी तथा अन्य जनों की भलाई करने के लिए तन मन धन से हमेशा तत्पर रहेंगी।

महोत्साही महायोद्धा विक्रमीविभवेश्वरः।
नित्य परोपकारी च मेषयोनौ भवेन्नरः।
मानसागरी

अर्थात मेषयोनि का जातक अतिउत्साही, महायोद्धा, पराक्रमी, ऐश्वर्यवान तथा परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति दशम भाव में है। अतः माता का आप पूर्ण स्नेह प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन सम्पत्ति तथा अन्य आवश्यक सुख संसाधनों से वे युक्त रहेंगी तथा जीवन के आवश्यक कार्यों में आपको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आप आजीविका, व्यापार तथा यश प्राप्ति भी उन्हीं के सहयोग से अर्जित करने में सफल होंगी।

आप उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा भाव रखेंगी एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा यदा कदा आपस में सैद्धान्तिक मतभेद होंगे किन्तु उससे आपके संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। आप भी उनकी सुख सुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा हर सम्भव उनका सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगी। इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य रूप से शुभ ही समझी जाएंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थता की अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही उनकी प्रवृति पुण्य एवं दान संबंधी कार्यों को करने की रहेगी अतः आपको भी वे पुण्य कार्यों की ओर प्रेरित करेंगे। साथ ही धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण आदर की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव उत्पन्न होगा परन्तु कुछ समय के बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। जीवन में आप उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगी एवं समयानुसार उनको पूर्ण सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कोई कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक व्याकुलता से वे पीड़ित रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान की भावना विद्यमान रहेगी। आपके संबंध प्रायः मधुर ही होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प समय के लिए संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। आप एक दूसरे से प्रायः सहमत रहेंगे एवं विश्वास भी करेंगे। इसके साथ ही आप भी हमेशा सुख दुःख में यथाशक्ति उनकी सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियाँ शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष दोनों की, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग, नागकरण, बुधवार, तृतीय प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा अनिष्ट फलदायक हैं। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य 2,7,12 तिथियों, अनुराधा नक्षत्र, व्याघात योग तथा नागकरण में कोई भी शुभकार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही बुधवार, तृतीय प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें तथा इन दिनों एवं समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य का भी उचित ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय शुभ न चल रहा हो मानसिक अशान्ति हो रही हो व्यापार में हानि अथवा नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव शंकर भगवान को नित्य विल्वपत्र चढाने चाहिए तथा सफेद मोती, सफेद वस्त्र, चावल इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए एवं सोमवार के भी व्रत रखने चाहिए। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 10000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं सोमाय नमः।